ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-3* April- 2021
Innovation The Research Concept

सी.बी.एस.ई. व आर.बी.एस.ई. विद्यालयों में मूल्यांकन की स्थिति

The status of Evaluation in CBSE & RBSE Schools

Paper Submission: 05/04/2021, Date of Acceptance: 15/04/2021, Date of Publication: 22/04/2021

मोनिका भादविया
शोधार्थी,
शिक्षा विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया
विश्वविद्यालय,
उदयपुर, राजस्थान, भारत

सुगन शर्मा
सेवानिवृत्त प्राचार्य,
विद्या भवन गांधीयन
इन्स्टीट्यूट ऑफ एजूकेशनल
स्टडीज, बडगाँव,
उदयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक स्तर पर सी.बी.एस.ई. व आर.बी.एस.ई. विद्यालयों में मूल्यांकन की स्थिति का अध्ययन करना है। इसके लिए उदयपुर जिले के 10 सी.बी.एस.ई. व 10 आर.बी.एस.ई. विद्यालयों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है। उक्त न्यादर्श से प्राथमिक तथ्यों का संकलन सर्वेक्षण विधि के अंतर्गत स्वनिर्मित अवलोकन प्रपत्र के माध्यम से किया गया। शोध परिणामों में सी.बी.एस.ई. व आर.बी.एस.ई.विद्यालयों में मूल्यांकन की स्थिति बोर्ड द्वारा दिये गये दिशा–निर्देशों के अनुरूप तथा लगभग एक समान पाई गई है।

The main objective of this research study is to compare the position of evaluation at Secondary level in C.B.S.E and R.B.S.E Schools. The researcher had chosen ten C.B.S.E and ten R.B.S.E schools of Udaipur region as the sample for research. The survey method was applied to collect the data by self-made questionnaire. After the data analysis it had been found that the evaluation process of C.B.S.E and R.B.S.E schools were almost the same and both follows the rules and regulations prescribed by the respective board.

मुख्य शब्द : सी.बी.एस.ई., आर.बी.एस.ई., मूल्यांकन।
C.B.S.E, R.B.S.E, Evaluation.

प्रस्तावना

शिक्षा से बालक के अंतस में छुपी बीज रूपी शक्तियों का वृहत् वृक्ष के रूप में बाहर प्रकटीकरण होता है। **"स्वामी विवेकानन्द ने भी कहा है। कि बालक में अर्न्तनिहीत पूर्णता को बाहर निकालना ही शिक्षा है।"** बालक ने कितना ग्रहण किया है, उसकी उपलब्धि कितनी रही है व उसे और कितना सीखने की आवश्यकता है इस सबका पता लगाने के लिए शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यांकन को तकनीकी शब्द के रूप में प्रयोग में लिया जाता है। वर्तमान में विद्यालय वह औपचारिक संस्था है जो सीखाने का कार्य करती है, जब भी बालक को कुछ सीखाया जाता है तो समय–समय पर इस बात की जाँच की जाती है कि उसने कितना सीखा, इस जाँचने को ही शिक्षा में मूल्यांकन कहा जाता है।

वर्तमान में राजस्थान राज्य में मुख्यतः दो प्रकार के विद्यालयों की प्राथमिकता है जो कि सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ सेकेण्डरी एज्यूकेशन (CBSE) व राजस्थान बोर्ड ऑफ सेकेण्डरी एज्यूकेशन (RBSE) से संचालित है। दोनों ही विद्यालयों में मूल्याकंन की अलग–अलग प्रणालियों को अपनाया गया है व समय–समय पर इन प्रणालियों में परिवर्तन भी किये गये है।

माध्यमिक स्तर पर आवश्यकतानुसार व विकासात्मक क्रम में कई प्रकार के परिवर्तन हुए है जैसे– प्रारम्भिक समय में त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक व वार्षिक परीक्षाओं का होना इसके अन्तर्गत लिखित, मौखिक, व प्रायोगिक मूल्यांकन करना, समय के साथ ही सन् 2010 से सतत् व समग्र मूल्यांकन के अन्तर्गत रचनात्मक मूल्यांकन (FA) व योगात्मक मूल्यांकन (SA) पद्धति के द्वारा मूल्यांकन किया जा रहा है लेकिन सन् 2015 से इस मूल्यांकन प्रणाली में भी कुछ परिवर्तन किए हैं। इन्हीं परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी के मन में सी. बी.एस.ई. व आर.बी.एस.ई. विद्यालयों में मूल्यांकन की स्थिति जानने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई और प्रस्तुत शोध हेतु शोधार्थी प्रेरित हुई।

समस्या का औचित्य (Justification of Problem)

किसी भी अध्ययन का औचित्य उसके परिणामों की विस्तृत क्षेत्र में सार्थकता एवं उपयुक्तता के आधार पर निश्चित किया जाता है, इस समस्या का औचित्य भी यह जानना है कि माध्यमिक स्तर पर सी.बी.एस.ई. व आर.बी. एस.ई. विद्यालयों में मूल्यांकन की स्थिति का पता लगाना तथा भविष्य में इस प्रणाली के प्रभाव का आंकलन करना जिससे शोध के पश्चात् मूल्यांकन को अधिक प्रभावी बनाया जा सके।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध हेतु निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं–

1. सी.बी.एस.ई. विद्यालयों में मूल्यांकन की स्थिति का अध्ययन करना।
2. आर.बी.एस.ई. विद्यालयों में मूल्यांकन की स्थिति का अध्ययन करना।
3. सी.बी.एस.ई. व आर.बी.एस.ई. विद्यालयों में मूल्यांकन की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना (Hypothesis)

प्रस्तुत शोध हेतु निम्नलिखित परिकल्पना निर्धारित की गई हैं–

''सी.बी.एस.ई. व आर.बी.एस.ई. विद्यालयों में मूल्यांकन की स्थिति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

पारिभाषिक शब्दावली (Operational Definitions)

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त तकनीकी शब्दावली का अर्थापन निम्नानुसार है–

In this research paper the keywords used, and their definitions are as follows:

सी.बी.एस.ई.विद्यालय

सी.बी.एस.ई. विद्यालयों से तात्पर्य उन विद्यालयो से है जिनमे पाठ्यक्रम संचालन केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा निर्धारित किया जाता है।

C.B.S.E Schools : C.B.S.E. Schools means the schools in which the syllabus is followed as per norms of Central Board of Secondary Education.

आर.बी.एस.ई.विद्यालय

आर.बी.एस.ई. विद्यालयों से तात्पर्य उन विद्यालयो से है जिनमे पाठ्यक्रम संचालन माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान द्वारा निर्धारित किया जाता है।

R.B.S.E Schools: R.B.S.E. Schools means the schools in which the syllabus is followed as per norms of Rajasthan Board of Secondary Education.

मूल्यांकन

प्रस्तुत शोध में मूल्यांकन से तात्पर्य बोर्ड द्वारा निर्धारित परीक्षा योजना से है जिसके द्वारा वर्ष पर्यन्त विद्यार्थी की शैक्षिक एवं सह शैक्षिक गतिविधियों का मापन किया जाता है।

Evaluation: The evaluation means in this research paper about the examination pattern which is designed by the board. From this evaluation pattern the students were evaluated throughout the year according to their Curricular activities and Co-Curricular activities.

अध्ययन का परिसीमन (Delimitation of the Study)

प्रस्तुत शोध अध्ययन को निम्न प्रकार से परिसीमित किया गया है–

जिले की दृष्टि से

प्रस्तुत शोधकार्य के अध्ययन क्षेत्र को सिर्फ उदयपुर जिले तक ही सीमित रखा गया है।

विद्यालयों की दृष्टि से

प्रस्तुत शोधकार्य 20 विद्यालयों तक ही सीमित है, जहाँ नियमित रूप से केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE) व माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान (RBSE) मूल्यांकन प्रणाली लागू है।

स्तर की दृष्टि से

प्रस्तुत शोधकार्य में सिर्फ कक्षा–10 की बोर्ड द्वारा निर्धारित परीक्षा योजना को ही आधार मानते हुए मूल्यांकन की स्थिति का अध्ययन किया गया है।

न्यादर्श (Sample)

प्रस्तुत शोधकार्य में उदयपुर जिले के 10 सी.बी. एस.ई. व 10 आर.बी.एस.ई. विद्यालयों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है।

शोध कार्यप्रणाली (Research Methodology)

शोधार्थी द्वारा अपनी समस्या की प्रकृति एवं उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है जिसके अन्तर्गत प्राथमिक आंकड़ों का संग्रहण चयनित न्यादर्श से स्वनिर्मित अवलोकन प्रपत्र के माध्यम से किया गया है। प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण गुणात्मक रीति से विषयवस्तु विश्लेषण पद्धति द्वारा कर शोध निष्कर्ष प्राप्त किये गये।

शोध सम्प्राप्तिया (Research Findings)

सी.बी.एस.ई. विद्यालयों में मूल्यांकन की स्थिति

1. सी.बी.एस.ई. विद्यालयों की पाठ्यक्रम में पाँच मुख्य विषय सम्मिलित हैं जिसमें दो भाषाएँ हैं।
2. अध्ययन क्षेत्र में सम्मिलित सी.बी.एस.ई. विद्यालयों में अतिरिक्त विषय पाठ्यक्रम में सम्मिलित नहीं है।
3. सी.बी.एस.ई. विद्यालयों में तृतीय भाषा को वैकल्पिक विषय के रूप में सम्मिलित किया गया है।
4. सी.बी.एस.ई. विद्यालयों में व्यावसायिक शिक्षा को एक सह–शैक्षणिक गतिविधि के रूप में सम्मिलित किया गया है।
5. सी.बी.एस.ई. विद्यालयों की परीक्षा योजना में कुल तीन सह–शैक्षणिक गतिविधियाँ सम्मिलित की गई हैं।
6. उक्त सह–शैक्षणिक गतिविधियों का मूल्यांकन ग्रेडिंग द्वारा किया जाना निश्चित किया गया है।
7. सी.बी.एस.ई. विद्यालयों की परीक्षा योजना में प्रत्येक मुख्य विषय का पूर्णांक 100 अंक रखा गया है।
8. सी.बी.एस.ई. विद्यालयों में उतीर्ण होने के लिए न्यूनतम प्राप्तांक 33 प्रतिशत रखे गये हैं।
9. सी.बी.एस.ई. विद्यालयों की परीक्षा योजना में पूर्णांक का विभाजन बोर्ड परीक्षा (80) सत्रांक (20) के मध्य किया गया है।

10. सी.बी.एस.ई. विद्यालयों की सत्रांक व्यवस्था में नोटबुक कार्य एवं विषय वृद्धि गतिविधियों को भारांक प्रदान किया गया है।
11. सी.बी.एस.ई. विद्यालयों में सत्रपर्यंत कुल तीन सामयिक परीक्षाएँ आयोजित की जाती हैं जिन्हें सत्रांक में सम्मिलित किया गया है।
12. सी.बी.एस.ई. विद्यालयों में अर्द्धवार्षिक परीक्षा का आयोजन नहीं किया जाता है।
13. सी.बी.एस.ई. विद्यालयों में परीक्षा परिणाम का प्रदर्शन प्रतिशत तथा ग्रेडिंग दोनों रूपों में किया जाता है।

आर.बी.एस.ई. विद्यालयों में मूल्यांकन की स्थिति

1. आर.बी.एस.ई. विद्यालयों की पाठ्यक्रम में छः मुख्य विषय सम्मिलित हैं जिसमें तीन भाषाएँ हैं।
2. चयनित आर.बी.एस.ई. विद्यालयों में व्यावसायिक शिक्षा एक अनिवार्य अतिरिक्त विषय के रूप में सम्मिलित है।
3. आर.बी.एस.ई. विद्यालयों में तृतीय भाषा को एक अनिवार्य अतिरिक्त विषय के रूप में सम्मिलित किया गया है।
4. आर.बी.एस.ई. विद्यालयों की परीक्षा योजना में कुल दो सह–शैक्षणिक गतिविधियाँ सम्मिलित की गई हैं।
5. उक्त सह–शैक्षणिक गतिविधियों का मूल्यांकन ग्रेडिंग द्वारा किया जाना निश्चित किया गया है।
6. आर.बी.एस.ई. विद्यालयों की परीक्षा योजना में प्रत्येक मुख्य विषय का पूर्णांक 100 अंक रखा गया है।
7. आर.बी.एस.ई. विद्यालयों में उतीर्ण होने के लिए न्यूनतम प्राप्तांक 33 प्रतिशत रखे गये हैं।
8. आर.बी.एस.ई. विद्यालयों की परीक्षा योजना में पूर्णांक का विभाजन बोर्ड परीक्षा (80) सत्रांक (20) के मध्य किया गया है।
9. आर.बी.एस.ई. विद्यालयों की सत्रांक व्यवस्था में प्रोजेक्ट कार्य, उपस्थिति तथा व्यवहार को भारांक प्रदान किया गया है।
10. आर.बी.एस.ई. विद्यालयों में सत्रपर्यंत कुल तीन सामयिक परीक्षाएँ आयोजित की जाती हैं जिन्हें सत्रांक में सम्मिलित किया गया है।
11. आर.बी.एस.ई. विद्यालयों में अर्द्धवार्षिक परीक्षा का आयोजन किया जाता है।
12. आर.बी.एस.ई. विद्यालयों में परीक्षा परिणाम का प्रदर्शन सिर्फ प्रतिशत रूप में किया जाता है।

सी.बी.एस.ई. व आर.बी.एस.ई. विद्यालयों में मूल्यांकन की तुलनात्मक स्थिति

क्र.सं.	आधार	सी.बी.एस.ई. विद्यालय	आर.बी.एस.ई. विद्यालय
1.	मुख्य विषय	पाँच	छः
2.	भाषाएँ	दो	तीन
3.	अतिरिक्त विषय	वैकल्पिक (अध्ययन क्षेत्र के विद्यालयों में	चयनित विद्यालयों में व्यावसायिक शिक्षा के रूप में
		नहीं)	अनिवार्य
4.	तृतीय भाषा	छठे अतिरिक्त विषय के रूप में वैकल्पिक	एक अनिवार्य विषय के रूप में
5.	व्यावसायिक शिक्षा	सह-शैक्षणिक गतिविधि के रूप में	अनिवार्य अतिरिक्त विषय के रूप में
6.	सह-शैक्षणिक गतिविधियाँ	तीन	दो
7.	सण शैण गतिविधियों का मूल्यांकन	ग्रेडिंग द्वारा	ग्रेडिंग द्वारा
8.	मुख्य विषयों का पूर्णांक	100	100
9.	न्यूनतम उत्तीर्णांक	33 प्रतिशत	33 प्रतिशत
10.	पूर्णांक विभाजन	बोर्ड परीक्षा (80) सत्रांक(20)	बोर्ड परीक्षा (80) सत्रांक(20)
11.	सत्रांक	नोटबुक कार्य एवं विषय वृद्धि गतिविधियों को भारांक	प्रोजेक्ट कार्य, उपस्थिति तथा व्यवहार को भारांक
12.	सामयिक परीक्षाएँ	तीन (सत्रांक में शामिल)	तीन (सत्रांक में शामिल)
13.	अर्द्धवार्षिक परीक्षा	आयोज्य नहीं	आयोज्य
14.	परीक्षा परिणाम का प्रदर्शन	प्रतिशत तथा ग्रेडिंग दोनों में	सिर्फ प्रतिशत में
15.	समग्र स्थिति	बोर्ड दिशा निर्देशों के अनुरूप	बोर्ड दिशा निर्देशों के अनुरूप

सी.बी.एस.ई. व आर.बी.एस.ई., दोनों ही प्रकार के विद्यालयों में मूल्यांकन की स्थिति बोर्ड द्वारा दिये गये दिशा–निर्देशों के अनुरूप पाई गई है। इसके अलावा यदि अतिरिक्त विषय की स्थिति, अर्द्धवार्षिक परीक्षा के आयोजन, ग्रेडिंग प्रणाली तथा तृतीय भाषा व व्यावसायिक शिक्षा विषयों की चयन प्रक्रिया को छोड़ दिया जाए तो इन दोनों विद्यालयों की मूल्यांकन स्थिति लगभग एक समान ही पाई गई है। अतः प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

शैक्षिक निहितार्थ (Educational Implications)

प्रस्तुत अध्ययन से जो निष्कर्ष सामने आये हैं, वे कई प्रकार की शैक्षिक समस्याओं के निराकरण में सहायक हैं। इसी में इस अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ छुपे हुए हैं, यथा–

1. प्रस्तुत शोध में स्पष्ट रूप से यह तथ्य निकलकर सामने आया है कि सी.बी.एस.ई. विद्यालयों में तृतीय भाषा का शिक्षण अनिवार्य विषय के रूप में सम्मिलित नहीं किया गया है जबकि आर.बी.एस.ई. विद्यालयों में यह एक अनिवार्य विषय के रूप में शुरू से ही पढ़ाई जाती रही है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध के माध्यम से देश के सभी सी.बी.एस.ई. विद्यालय तृतीय भाषा के शिक्षण के महत्त्व को समझेंगे जिससे हिंदी एवं अंग्रेजी के अलावा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को भी पर्याप्त सम्मान प्राप्त होगा।
2. प्रस्तुत शोध व्यावसायिक शिक्षा की बढ़ती प्रासंगकिता पर भी प्रभाव डालता है। सी.बी.एस.ई. विद्यालयों में जहाँ इसे एक सह–शैक्षणिक गतिविधि के रूप में सम्मिलित कर पढ़ाया जाता है वहीं कुछ चयनित आर.बी.एस.ई. विद्यालयों में इसे एक वैकल्पिक विषय के तौर पर पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है। कुल मिलाकर दोनों ही प्रकार के विद्यालयों में किसी न किसी रूप में व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा दिया जा रहा है जिसे प्रस्तुत शोध द्वारा उजागर किया गया है।
3. प्रस्तुत अध्ययन जहाँ एक ओर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की उपादेयता को प्रमाणित करता है वहीं इसकी कुछ समस्याओं जैसे विद्यार्थियों में होने वाला तनाव, अरुचि, निराशा तथा असंतोष इत्यादि को भी उजागर करता है। इस प्रकार सी.बी.एस.ई. व आर.बी. एस.ई. विद्यालयों में मूल्यांकन की वस्तुस्थिति का यह निष्पक्ष एवं पूर्वाग्रह से मुक्त विश्लेषण इन विद्यालयों में मूल्यांकन की स्थिति को ओर बेहतर बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

अनुशंसाएँ
(Recommendations)

प्रस्तुत शोध से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर सी. बी.एस.ई. व आर.बी.एस.ई. विद्यालयों में मूल्यांकन की स्थिति को बेहतर बनाने के सम्बन्ध में कई महत्त्वपूर्ण अनुशंसाएँ शोधार्थी द्वारा की गई हैं जिन्हें निम्न बिन्दुओं के अंतर्गत स्पष्ट किया गया है–

1. विद्यार्थियों के सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की इस प्रक्रिया में जो अत्यधिक समय लगता है उसे ध्यान में रखते हुए मूल्यांकन प्रक्रिया को थोड़ा संक्षिप्त किया जाना चाहिए ताकि विद्यार्थियों में मूल्यांकन के प्रति रूचि को बरकरार रखा जा सके।
2. विद्यार्थियों में परीक्षाओं से होने वाले तनाव को कम करने हेतु आंतरिक मूल्यांकन का अंक भार बढ़ाया जाना चाहिए।
3. पाठ्यक्रम में कठिन विषयों जैसे अंग्रेजी, गणित तथा विज्ञान के दो स्तर– एक सरल एवं एक कठिन सम्मिलित किया जाना चाहिए। सरल स्तर सामान्य विद्यार्थियों के लिए जबकि कठिन स्तर उच्च माध्यमिक स्तर की कक्षाओं में इन विषयों का चयन करने वाले विद्यार्थियों के लिए उपयोगी रहेगा।
4. इसके अलावा उक्त विषयों के लिए पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त सन्दर्भ पुस्तकों की व्यवस्था भी विद्यालयों में की जानी चाहिए जिससे विद्यार्थियों को अधिक से अधिक प्रमाणिक पठन सामग्री उपलब्ध कराई जा सके।
5. वर्तमान में जिस वस्तुनिष्ठता के साथ शैक्षणिक विषयों का मूल्यांकन किया जाता है उतना सह शैक्षणिक गतिविधियों का नहीं किया जाता है। अतः सह शैक्षणिक गतिविधियों के अंक भी मूल्यांकन में जोड़े जाने चाहिए।
6. वर्तमान में वर्षभर किसी न किसी रूप में मूल्यांकन परीक्षाएँ चलती ही रहती है जिससे दैनिक कक्षा–कक्ष शिक्षण बाधित होता है। अतः आंतरिक परीक्षाओं की समय–सारणी इस प्रकार निर्मित की जानी चाहिए कि सामान्य कक्षा–कक्ष शिक्षण भी निर्बाध चलता रहे।
7. मूल्यांकन के पश्चात् उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था भी की जानी चाहिए ताकि विद्यार्थियों को अपनी कमियों के सम्बन्ध में उचित प्रतिपुष्टि प्राप्त हो सके।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र में सी.बी.एस.ई. व आर.बी.एस.ई. विद्यालयों में मूल्यांकन की स्थिति का पृथक–पृथक एवं तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।दोनों ही प्रकार के विद्यालयों में मूल्यांकन की स्थिति बोर्ड द्वारा दिये गये दिशा–निर्देशों के अनुरूप तथा लगभग एक समान पाई गई है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची (References)

1. *New Exam Pattern for CBSE Class 10 Board Exam 2017-18*
2. *Bhadwal, C.S, Panda, And Kumar P. (1989). 'Evaluation At Primary Stage', The Primary Teacher, Pp.13-17.*
3. *Bursuck, William And Others (1996).'Report Card Grading and Adaptations: A National Survey of Classroom Practices'*
4. *CBSE (2009). 'Teachers' Manual on Continuous and Comprehensive Evaluation.'*
5. *Khandelwal, B.P (2002). 'Examination and Test Systems at School Level In India: Their Impact onInstitutional Quality'*
6. *NCERT (2004). 'Training in Continuous and Comprehensive Evaluation'.*
7. *विवरणिका (Syllabus) माध्यमिक परीक्षा 2018।*
8. *त्रिवेदी, आर. एवं शुक्ला, डी. (2008). सामाजिक अनुसंधान एवं सामाजिक शोध, रिसर्च मेथ्डोलोजी, जयपुर : कॉलेज बुक डिपो।*
9. *शर्मा, आर. (2004). सर्वेक्षण विधि, शिक्षा अनुसंधान, मेरठ : आर. लाल. बुक डिपो।*
10. *कोठारी, सी. (1985). रिसर्च मैथेडोलोजी, नई दिल्ली : दिल्ली इस्टर्न लिमिटेड।*